हिन्दी ज़बान में नमाज़ की सबसे आसान किताब

नमाज़

मुतर्जम

हिन्दी ज़बान में नमाज़ की सबसे आसान किताब

तर्कीबे नमाज़

मुतर्जम

वुज़ू, नीयत, रूकूअ़, सजदा, जल्सा, क़अ़दा, सलाम

सबीला पब्लिकेशन्स
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

विषय-सूची

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ के लिए कुछ शर्तें हैं, जिनको पूरा किए बग़ैर नमाज़ नहीं हो सकती। कुछ शर्तों का नमाज़ शुरू करने से पहले पूरा करना ज़रूरी है, जैसे वुज़ू और कुछ शर्तों का नमाज़ पढ़ते हुए ख़याल रखा जाता है।

नमाज़ पढ़ने से पहले इन सात शर्तों को पूरा करना ज़रूरी है—

1. बदन पाक हो, 2 कपड़े पाक हों, 3. नमाज़ पढ़ने की जगह पाक हो, 4. कपड़े पहन रखे हों, यानी सतर छिपा रखा हो, 5. नमाज़ का वक़्त हो, 6. क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना, 7. नीयत करना यानी यह इरादा करना और ध्यान जमाना कि मैं फ़्लां नमाज़ पढ़ रहा हूं।

1. (क) बदन पाक करने के लिए अगर नहाने की

ज़रूरत हो तो नहा लीजिए या बदन पर गन्दगी लगी हो तो धो लीजिए।

गुस्ल (नहाने) की तर्कीब यह है—

पहले पाक-साफ़ पानी लीजिए, फिर दोनों हाथ धोइए।

इस्तिंजा कीजिए।

बदन पर से गन्दगी अगर लगी हो, तो धो डालिए, फिर वुज़ू कीजिए। अगर रोज़ा न हो, तो कुल्ली के साथ ग़रारा भी कीजिए, फिर सारे बदन पर तीन बार पानी डालिए याद रखिए गुस्ल में कुल्ली करना और बदन पर पानी डालना फ़र्ज़ है, इनके बग़ैर गुस्ल नहीं हो सकता।

(ख) बदन पाक करने के लिए अगर नहाने की ज़रूरत न हो तो सिर्फ़ वुज़ू कर लीजिए। वुज़ू की तर्कीब यह है—

सबसे पहले दोनों हाथ तीन बार धोइए। हरी टहनी की मिस्वाक से दांत साफ़ कीजिए। अगर

मिस्वाक न हो तो ब्रुश से वरना दाहिने हाथ की बड़ी उंगली से दांत मलिए, फिर तीन बार कुल्ली कीजिए, तीन बार नाक में पानी डालकर बाएं हाथ से नाक साफ़ कीजिए। फिर पूरे चेहरे पर तीन बार पानी डालिए। इस्का खयाल रखिए कि पेशानी के बालों से ठोढ़ी के नीचे तक और कानों की कंपटियों तक कोई ज़रा सा बाल बराबर भी हिस्सा सूखा न रहे, वरना वुज़ू न होगा, फिर दोनों हाथ कुहनी समेत तीन-तीन बार धोइए। अब नया पानी लेकर सर-कानों और गरदन का मसह कीजिए। आख़िर में दोनो पांव धोइए। पहले दाहिना, फिर बायां। वुज़ू करते वक़्त बातें नहीं करनी चाहिए।

2. नमाज़ पढ़ने के लिए कपड़ों का पाक होना भी फ़र्ज़ है और अच्छा यह है कि कपड़े साफ़ हों, मैले न हों, बदबू न आती हो। आप हमेशा खयाल रखिए कि आपके साथ फ़रिश्ते भी रहते हैं, बदन की बदबू से, जैसे आपके साथी इंसानों को तकलीफ़ होती है,

उसी तरह फ़रिश्तों को भी तकलीफ़ होती है।

3. नमाज़ पढ़ने की जगह पाक होनी चाहिए। ज़मीन पर कोई पाक कपड़ा बिछा लीजिए। गंदगी के पास या गंदी ज़मीन पर नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। सूखी ज़मीन पाक मानी जाती है। लॉन पर भी आप नमाज़ पढ़ सकते हैं।

4. नमाज़ के लिए मुनासिब कपड़े पहनना भी ज़रूरी है। मर्द के लिए नाफ़ से नीचे घुटने तक बदन का ढांकना फ़र्ज़ है और औरत के लिए हाथ-पांव और मुंह के अलावा सारा बदन ढांकना फ़र्ज़ है। जिस हिस्से का छिपाना फ़र्ज़ है, उसी को सतर कहते हैं।

5. नमाज़ का वक़्त भी नमाज़ पढ़ने के लिए ज़रूरी है, यानी जिस नमाज़ के लिए जो वक़्त रखा गया है, उसी वक़्त वह नमाज़ पढ़नी चाहिए, वक़्त से पहले पढ़ने से नमाज़ नहीं होगी और दोबारा पढ़नी पड़ेगी। वक़्त के बाद नमाज़ क़ज़ा हो जाती है,

जिसका सवाब वक़्त पर पढ़ी गयी नमाज़ के बराबर नहीं होता और वक़्त पर न पढ़ने का गुनाह भी होता है।

6. नमाज़ पढ़ते वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना भी लाज़िम है, भारत, पाकिस्तान से क़िब्ला पश्चिम की तरफ़ है। मुसलमानों का क़िब्ला ख़ाना काबा शहर-मक्का में है और मक्का मुकर्रमा अरब में है।

नीयत करने का तरीक़ा

7. मुसलमानों की तमाम इबादतों की तरह नमाज़ में भी नीयत करना फ़र्ज़ है। अगर आप नीयत किए बग़ैर नमाज़ पढ़ लेंगे, तो नमाज़ न होगी और उस नमाज़ को दोहराना भी आपके लिए लाज़िम होगा। मक़सद यह है कि आपके ज़ेहन में यह बात साफ़ हो कि आप किस वक़्त की कौन-सी, कितनी रक्अतों वाली और किसके लिए नमाज़ पढ़ रहे हैं, जैसे, पांच फ़र्ज़ नमाज़ों में लिखी हुई बात आपके ज़ेहन और ध्यान में हो, ज़बान से अदा करना ज़रूरी नहीं है।

फ़ज्र—मैं नीयत करता हूं दो रक्अत नमाज़ फ़र्ज़, फ़ज्र वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

ज़ुहर—मैं नीयत करता हूं चार रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ ज़ुहर, वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

अस्र—मैं नीयत करता हूं चार रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ अस्र, वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

मग़्रिब—मैं नीयत करता हूं तीन रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ मग़्रिब, वाते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

इशा—मैं नीयत करता हूं चार रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ इशा, वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़

वाजिब नमाज़ के लिए—

नीयत—मैं नीयत करता हूं, तीन रक्अत नमाज़

वित्र, वाजिब वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

दिन-रात में सिर्फ़ तीन रक्अत वित्र वाजिब हैं, जो इशा के बाद पढ़े जाते हैं। अगर आप जमाअत से नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो आपके ज़ेहन में यह भी होना चाहिए कि मैं इस इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूं।

सुन्नत नमाज़ की नीयत

मैं नीयत करता हूं 2/4 रक्अत नमाज़ सुन्नत, वक़्त फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा, वास्ते अल्लाह के मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

सुन्नत नमाज़ ही की तरह नफ़्ल नमाज़ की नीयत भी की जाती है, सिर्फ़ नमाज़ सुन्नत के बजाए नमाज़ नफ़्ल कहा जाता है।

वुज़ू, गुस्ल और नमाज़ में कुछ काम फ़र्ज़ हैं, कुछ वाजिब हैं, कुछ सुन्नत और कुछ मुस्तहब। कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिनको वुज़ू, गुस्ल और नमाज़ में नहीं करना चाहिए, ये मक्रूह कहलाती हैं। हम इन कामों और

चीज़ों को अलग-अलग लिख रहे हैं—

वुज़ू

फ़र्ज़

* पूरा चेहरा धोना,
* दोनों हाथ कुहनियों समेत धोना,
* चौथाई सर का मसह करना,
* टख़नों समेत दोनों पांव धोना,

नोट : हर उज़्व को एक बार अच्छी तरह धोना फ़र्ज़ है।

वाजिब

अंगूठी या छल्ला अगर तंग हो तो उसको घुमाना ताकि पानी उसके नीचे पहुंच जाए।

सुन्नत

* नीयत करना,
* बिस्मिल्लाह पढ़ना,

* तीन बार दोनों हाथ गट्टों तक धोना
* तीन बार कुल्ली करना,
* तीन बार नाक में पानी डालना
* पूरे सर का मसह करना
* दाढ़ी में खिलाल करना, (ताकि कोई बाल सूखा न रह जाए).
* उंगलियों का खिलाल करना,
* कानों का मसह करना,
* हर उज़्व को तीन बार धोना;
* धोते वक़्त हाथ से मलना;
* तर्तीब से वुज़ू करना,
* लगातार करना, यानी धोने में इतनी देर न करना कि जो उज़्व पहले धो लिया जा चुका है, वह सूख जाए।

मुस्तहब

* दाईं जानिब से शुरू करना,
* गर्दन पर मसह करना,

* नमाज़ के वक़्त से पहले वुज़ू करना,
* क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करके बैठना,
* पाक और ऊंची जगह पर बैठकर वुज़ू करना,
* दूसरे की मदद के बग़ैर ख़ुद वुज़ू करना

मकरूह

* वुज़ू करते वक़्त दुनिया की बातें करना
* ज़्यादा पानी बहाना,
* नापाक जगह पर वुज़ू करना,
* सीधे हाथ से नाक साफ़ करना,
* सुन्नत के ख़िलाफ़ वुज़ू करना
* हर उज़्व को तीन बार से ज़्यादा धोना।

ग़ुस्ल

फ़र्ज़

* कुल्ली करना,
* नाक में पानी डालना,
* तमाम बदन पर पानी बहाना

सुन्नत

* इरादा करना,
* दोनों हाथ को गट्टों तक धोना,
* इस्तिंजा करना,
* पहले वुज़ू कर लेना,
* तीन बार तमाम बदन पर पानी बहाना

नमाज़ के फ़र्ज़

नमाज़ शुरू करने से पहले—

* वुज़ू या ग़ुस्ल,
* पाक कपड़े,
* पाक जगह,
* सतर छिपाना,
* नमाज़ का वक़्त,
* क़िब्ले की तरफ़ रुख़,
* नीयत,

नमाज़ शुरू करते हुए—

तक्बीरे तह्‌रीमा (अल्लाहु अकबर) नमाज़ में
* खड़े होना, क़िरात यानी कुरआन मजीद में से कुछ पढ़ना,
* रुकूअ,
* दोनों सजदे,
* नमाज़ के आख़िर में अत्तहीयात पढ़ने के लिए बैठना

वाजिब

नमाज़ में—
* फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रक्अत में क़िरात फ़र्ज़ नमाज़ों की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा पढ़ना,
* फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रक्अतों में, वाजिब सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद कुरआन मजीद की छोटी तीन आयतें या कोई बड़ी आयत या सूरः पढ़ना,
* सूरः फ़ातिहा किसी और सूरः से पहले पढ़ना,
* तर्तीब क़ायम रखना

* रुकूअ करके सीधा खड़ा होना,
* पहला सज्दा करके दूसरे सज्दे से पहले कुछ देर बैठना,
* नमाज़ आहिस्ता और अच्छी तरह अदा करना,
* दो रक्अत पढ़कर अत्तहीयात के लिए बैठना ।

नमाज़ के फ़र्ज़ों में से अगर कोई फ़र्ज़ छूट जाए तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी । अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए या फ़र्ज़ में देर या दोबारा हो जाए तो आख़िर क़अदा में सज्दा सह्व करने से नमाज़ अदा हो जाएगी । अगर सज्दा सह्व करना भी याद न रहे, तो नमाज़ फिर पढ़नी होगी ।

सज्दा सह्व

सज्दा सह्व की तर्कीब यह है कि नमाज़ की आख़िरी रक्अत में अत्तहीयात पढ़कर दाईं तरफ़ सलाम फेरकर दो सज्दे कर लीजिए सज्दे करने के बाद अत्तहीयात, दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ने के बाद सलाम फेर लीजिए ।

अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर भी सज्दा सह्व किया जा सकता है।

आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि दिन-रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, लेकिन फ़र्ज़ के अलावा पांच नमाज़ों के साथ पहले या बाद में कुछ सुन्नत और कुछ नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ी जाती हैं, जिनकी तफ़्सील आगे दी जा रही है।

नमाज़ का वक़्त	ताकीदी सुन्नत	ग़ैर ताकीदी सुन्नत	फ़र्ज़	वाजिब	नफ़्ल	कुल तायदाद
फ़ज्र[1]	2	–	2	–	–	4
ज़ुहर[2]	6	–	4	–	2	12
अस्र[3]	–	4	4	–	–	8
मग़रिब[4]	2	–	3	–	2	7
इशा[5]	2	4	4	3	4	17
जुमा[6]	10	–	2	–	2	14

1. क़ज़ा होने पर सूरज निकलने के बाद ताकीदी सुन्नत के बाद ।

इशा की नमाज़ के बाद यानी चार फ़र्ज़ और सुन्नतों और नफ़्लों के बाद तीन रक्अतें वाजिब वित्र पढ़ी जाती हैं। फिर दो रक्अत नफ़्ल आख़िर में पढ़ना चाहिए। इस तरह इशा की नमाज़ में कुल सत्तरह रक्अतें होती हैं।

तर्कीबे नमाज़

सबसे पहले वुज़ू कर लीजिए, या अगर ग़ुस्ल की ज़रूरत हो, तो नहा लीजिए, अगर जमाअत का वक़्त हो, तो मस्जिद में जाकर इमाम साहब के पीछे नमाज़ पढ़िए, जमाअत से नमाज़ पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है। बेहतर यह है कि आप वुज़ू घर से करके जाएं, यह अफ़ज़ल है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है। आप मस्जिद में जाकर भी वुज़ू कर सकते हैं। अगर आप अकेले नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो वुज़ू कीजिए, क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके खड़े हो जाइए, नमाज़ की नीयत कीजिए, ज़बान से नीयत अदा करना ज़रूरी नहीं,

लेकिन अगर कह लें तो बहुत अच्छा है, अब दोनों हाथ ऊपर उठाइए, हाथ खुले हुए हों, हथेलियां क़िब्ले की तरफ़ हों, उंगलियां सीधी हों हाथ इतने ऊपर उठाइए कि दोनों हाथों के अंगूठे दोनों कानों की लौ के बराबर हो जाएं, फिर तक्बीर यानी अल्लाहु अकबर कहते हुए दोनों हाथ नाफ़ के नीचे बांध लीजिए, बायां हाथ नीचे और उसके ऊपर दाहिना हाथ रख लीजिए। बायां हाथ खुला रखिए, दाहिने हाथ की हथेली बाएं हाथ के गट्टे पर तीन खुली हुई उंगलियां पहुंचे पर फैलाकर रखिए, अंगूठे और छोटी उंगली का हल्क़ा बना लीजिए।

अब तस्बीह 'सुब्हा-न-क. . . .' पढ़िए। इसके बाद 'तअव्वुज़' (अऊज़ु बिल्लाह) और 'तस्मिया' (बिस्मिल्लाह) पढ़िए। फिर सूरः फ़ातिहा यानी 'अलहम्दु लिल्लाह'. . . . . पढ़िए। इसके बाद कोई सूरः जैसे सूरः 'काफ़िरून' (क़ुल या अय्युहल काफ़िरून) पढ़िए।

सूरः के बाद तक्बीर कहते हुए रुकूअ के लिए झुकिए। (तस्बीह वग़ैरह की तफ़्सील आगे आ रही है।)

रुकूअ में दोनों हथेलियां घुटनों पर मज़बूती से रखिए। पिंडलियां सीधी खड़ी कीजिए। दोनों कुहनियां भी सीधी रखिए। कमर फैलाइए। सर को कमर के बराबर सीध में और नज़र पैरों के दरमियान रखिए। अब तीन बार तस्बीह 'सुब्हा-न-रब्बियल अज़ीम' पढ़िए।

क़ौमा—फिर (समिअल्लाहु लिमन हमिदह) कहते हुए खड़े हो जाइए और 'रब्बना लकल हम्द' कहिए।

सज्दा—फिर तक्बीर कहते हुए सज्दे के लिए झुकिए। पहले ज़मीन पर दोनों घुटने, फिर दोनों हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी रखिए। सज्दे में पेशानी, ज़मीन पर रखना लाज़िम है, वरना नमाज़ नहीं होगी। सज्दे में चेहरा दोनों हाथों के दरमियान

इस तरह रहे कि अंगूठे कानों की लौ की सीध में हों। हथेलियां खुली हुई हों, उंगलियां भी मामूल के मुताबिक़ खुली हुई हों और सर की सीध में ज़मीन पर रखी हुई हों, कमर ऊंची उठी हुई, कुहनियां और रानें पेट से अलग रहें, पैरों के पूरे पंजे ज़मीन पर रखे हों। उंगलियों के सिरे क़िब्ले की तरफ़ मुड़े हुए हों। कम से कम एक पैर का अंगूठा ज़मीन से लगा रहना ज़रूरी है। अगर दोनों पैर ज़मीन से उठ गये तो नमाज़ नहीं होगी। सज्दे में तीन बार 'सुब्हा-न रब्बियल अअला' पढ़िए।

जल्सा—फिर तक्बीर कहते हुए दो ज़ानू बैठ जाइए। बैठने के लिए घुटने मोड़ कर दायां पांव खड़ा कर लीजिए और बायां पांव बिछा लीजिए। उंगलियां जहां तक हो सके, क़िब्ले की तरफ़ रहें। आधे मिनट यानी इत्मीनान से बैठने के बाद दूसरा सज्दा कीजिए। तक्बीर कहते हुए सज्दे में जाइए और तीन बार फिर 'सुब्हा-न रब्बियल अअला'

पढ़िए। अब तक्बीर कहते हुए सीधे खड़े हो जाइए। अब सज्दे से उठने और खड़े होने की बेहतर सूरत यह है कि पहले पेशानी ज़मीन से उठाइए, फिर नाक, इसके बाद दोनों हाथ उठाकर घुटनों पर रखिए, फिर सीधे खड़े हो जाइए। अब आपकी पहली रक्अत पूरी हो गयी। इस तरह दूसरी रक्अत पूरी कीजिए।

दूसरी रक्अत—में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः पढ़िए, मगर यह ख़याल रखिए कि दूसरी रक्अत में पढ़ी जाने वाली सूरः पहली रक्अत की सूरः से बड़ी न हो।

क़अदा—दूसरे सज्दे के बाद बैठ जाइए और अत्तहीयात पढ़िए। अब अगर आपने दो रक्अत नमाज़ की नीयत की थी, तो अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ पढ़िए और इसके बाद दुआ 'अल्लाहुम-म इन्नी....'

सलाम—फिर सलाम यानी 'अस्सलामु अलैकुम

व रह्मतुल्लाह' कहते हुए दाहिनी तरफ़ मुंह मोड़िए, फिर दोबारा सलाम कहते हुए बाईं तरफ़ रुख कीजिए और दुआ पढ़िए 'अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु .....'

तीन यार चार रक्अतों वाली नमाज़—अगर आपने तीन या चार रक्अत की नीयत की थी तो अत्तहीयात पढ़कर तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। बिस्मिल्लाह पढ़िए फिर सूरः फ़ातिहा पढ़िए अगर आप फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो तीसरी और चौथी रक्अत में सिर्फ़ सूरः 'फ़ातिहा' पढ़िए, लेकिन अगर आप वाजिब या सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ पढ़ रहे हैं तो सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः ज़रूर पढ़िए। सूरः के बाद रुकूअ और सज्दा कीजिए और जितनी रक्अतों की नीयत की थी उन्हें पूरा करने के बाद सलाम फेरकर दुआ मांगिए।

याद रखिए—हर रक्अत में कुछ देर खड़ा होना, रुकूअ करना, दो सज्दे करना फ़र्ज़ है। पहली रक्अत में तक्बीर तहरीमा के बाद सना, तअव्वुज़, तस्मिया,

सूरः फ़ातिहा से पहले पढ़िए, दूसरी रक्अत में पहले बिस्मिल्लाह आहिस्ता पढ़ी जाती है, फिर सूरः फ़ातिहा और फिर कोई सूरः पढ़ी जाती है, सना और तअव्वुज़ नहीं पढ़ा जाता। दूसरी रक्अत में दो सज्दे करने के बाद अत्तहीयात पढ़ने के लिए बैठना ज़रूरी है इस बैठने को क़अदा कहते हैं। तीन या चार रक्अत वाली नमाज़ में दो 'क़अदे' होते हैं—

क़अदा ऊला—जो बीच में होता है यानी दो रक्अत के बाद तीसरी रक्अत से पहले—

क़अदा अख़ीरा—जो नमाज़ के आख़िर में हो, जिसके बाद सलाम फेर दिया जाए।

यह भी याद रखिए कि क़अदा अख़ीरा, जिसके बाद सलाम फेरा जाए, फ़र्ज़ होता है। फ़र्ज़ों के अलावा वाजिब, सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः पढ़ी जाती है।

इमाम के पीछे नमाज़

जमाअत से नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा दुनिया में निराला है। यह एक ऐसा तरीक़ा है, जिससे हमारे मज़हब की शान ज़ाहिर होती है, अपने और बेगाने सभी इससे असर लेते हैं।

दिन-रात में पांच फ़र्ज़ नमाज़ें जमाअत से पढ़ी जाती हैं। रमज़ानुल मुबारक के महीने में बीस रक्अतें तरावीह और तीन रक्अतें वित्र भी जमाअत के साथ पढ़े जाते हैं।

जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए

1. नीयत करते वक़्त इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का इरादा भी किया जाता है, जैसे नीयत करता हूं दो रक्अत नमाज़ फ़र्ज़, वक़्त फ़ज्र, इमाम के पीछे, अल्लाह के वास्ते, रुख मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर . . . .

2. सना, तअव्वुज़, तस्मिया के बाद सूरः फ़ातिहा और क़ुरआन मजीद की आयतें सिर्फ़ इमाम पढ़ता है। इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले सना पढ़ने के बाद ख़ामोश रहते हैं।

3. रुकूअ से खड़े होते वक़्त इमाम 'समिअल्लाहु मिलन हमिदह' कहता है, लेकिन मुक़्तदी सिर्फ़ 'रब्बना लकल हम्द' कहते हैं।

रूकूअ और सज्दों का तरीक़ा वही है। सज्दा करने के बाद आखिरी रक्अत में अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ने पर ख़ामोश बैठे रहिए, और इमाम के साथ सलाम फेरिए।

मस्बूक़—एक या दो रक्अत के बाद जमाअत में शरीक होने वाला। जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए आप मस्जिद में ऐसे वक़्त पहुंचे, जैसे अस्र की नमाज़ की एक या दो रक्अतें हो चुकी थीं ऐसे वक़्त फ़ौरन वुज़ू करके इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने की नीयत करके जमाअत में शरीक हो जाइए। वक़्त हो

तो सना पढ़ लीजिए। आख़िरी रक्अत के क़अदे में आप सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़िए और दरूद शरीफ़ न पढ़िए। ख़ामोश बैठे हुए इमाम के सलाम का इन्तिज़ार कीजिए, जब इमाम सलाम फेर चुके तो आप तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। अब आप अपनी नमाज़ शुरू से पढ़िए यानी सना तअव्वुज़ और तस्मिया पढ़िए। सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़ने के बाद रुकूअ और सज्दे कीजिए। अब अगर आपकी दो रक्अतें हो गई है तो सज्दे के बाद बैठकर अत्तहीयात पढ़िए। अगर यह तीसरी रक्अत है तो सज्दा के बाद खड़े हो जाइए और सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़िए और चार रक्अतें पूरी करने के बाद अत्तहीयात और दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर सलाम फेर लीजिए।

जमाअत में शरीक होने के बाद जो इब्तिदाई रक्अतें रह गयी थीं उनको खड़े होकर अदा किया जाता है, लेकिन अत्तहीयात के लिए अदा की गयी

रक्अतों का ख़याल रखा जाता है।

जैसे—जिस वक़्त आप जमाअत में शरीक हुए, इमाम साहब अस्र की नमाज़ की तीन रक्अतें पढ़ा चुके थे और चौथी रक्अत में खड़े थे, तक्बीरे तहरीमा कहकर जमाअत में शरीक हो गये। इमाम के साथ रुकूअ व सज्दे किये। अब जमाअत की चार रक्अतें पूरी हो चुकी थीं। इमाम ने सलाम फेरा, दाईं तरफ़ सलाम के वक़्त आप बैठे रहिए, जब इमाम बाईं तरफ़ सलाम कहे तो आप तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। आप सना, तअव्वुज़, तस्मिया और फिर सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़कर रुकूअ व सज्दे कीजिए। अब आपकी दो रक्अतें पूरी हो गयीं, इसलिए आप बैठकर अत्तहीयात पढ़िए। अत्तहीयात के बाद तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाए। अब आप इस रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद आयतें भी पढ़िए, क्योंकि यह रक्अत आपकी वह दूसरी रक्अत है जो आपने इमाम के साथ नहीं पढ़ी थी। रुकूअ व सज्दे

के बाद बैठिए नहीं, बल्कि खड़े होकर सिर्फ़ सूरः फ़ातिहा पढ़कर रुकूअ व सज्दे कर लीजिए। आपकी भी अब चार रक्अतें पूरी हो गयीं, एक इमाम के साथ और तीन अकेले, इसलिए सज्दे के बाद अत्तहीयात, दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर सलाम फेरिए।

मग़रिब की जमाअत में आपको इमाम के साथ आख़िरी रक्अत मिल सकी है, तो आप इमाम के साथ रुकूअ और सज्दे करके क़अदे में सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़कर ख़ामोश बैठ जाइए। जब इमाम एक सलाम के बाद दूसरा सलाम फेरे, तो आप तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए, और सना, तअव्वुज़, और तस्मिया और सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़कर रुकूअ और सज्दे करके बैठ जाइए और सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़कर तक्बीर कहते हुए तीसरी रक्अत के लिए खड़े हो जाइए और इस रक्अत में भी सूरः फ़ातिहा के साथ कोई सूरः पढ़िए

और रुकूअ और सज्दे करके अख़ीर क़अदे में अत्तहीयात, दरूद और दुआ पढ़कर सलाम फेर लीजिए। इस तरह बग़ैर सूरः की एक रक्अत तो इमाम के साथ हो गयी और दो रक्अतें सूरः फ़ातिहा और आयतों समेत आपने अदा कर लीं।

नमाज़ के फ़र्ज़ों और शर्तों के ख़िलाफ़ तमाम चीज़ें नमाज़ तोड़ देती हैं, नमाज़ में ज़ोर से खांसना, जम्हाई लेना और डकारें लेना मक्रूह है। मुनासिब और साफ़ कपड़े होने चाहिएं। ऐसे कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना मक्रूह है, जिनको पहनकर आप किसी अच्छी महफ़िल में जाना पसन्द न करें।

नमाज़ पढ़ने वाले के सामने से न गुज़रिए क्योंकि इससे नमाज़ पढ़ने वाले का ख़याल बटता है जिसका गुनाह आपको होगा।

जुम्आ

जुम्ओ के दिन ज़ुहर के चार फ़र्ज़ों के बजाए

नमाज़ जुम्आ दोगाना अदा किया जाता है। जुम्ओ की नमाज़ सिर्फ़ बड़ी मस्जिद में ही अदा की जा सकती है। हर मस्जिद में जुम्ओ की नमाज़ पढ़ना मुनासिब नहीं। नमाज़ से पहले दो अज़ानें होती हैं। पहली अज़ान नमाज़ की अज़ान होती है। दूसरी अज़ान ख़ुत्बे की।

पहली अज़ान के बाद आप सुन्नतें पढ़िए ख़ुत्बे की अज़ान के बाद फ़ौरन ख़ुत्बा शुरू हो जाता है। ख़ुत्बा पूरी तवज्जोह से सुनना चाहिए। कोई दूसरा काम करना या नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं, मना है। जुम्ओ की नमाज़ के लिए ग़ुस्ल करना सुन्नत है। ख़ुश्बू लगाना, पाक-साफ़ कपड़े पहना मुस्तहब है।

जब आप मस्जिद में या जामा मस्जिद में दाख़िल हों तो पहले बैठिए नहीं बल्कि अगर सुन्नतें पढ़नी हैं तो फ़ौरन सुन्नतें पढ़नी शुरू कर दीजिए। इस तरह इन सुन्नतों का सवाब दोगुना होगा—एक उस वक़्त की सुन्नतों या नफ़्लों का और दूसरा तहीयतुल- मस्जिद

का लेकिन अगर आप बैठ गये, फिर खड़े होकर सुन्नतें पढ़ने लगे, तो सिर्फ़ वक़्त की सुन्नतों या नफ़्लों का सवाब मिलेगा, तहीयतुल मस्जिद का सवाब नहीं मिलेगा, क्योंकि बैठ जाने के बाद तहीयतुल मस्जिद का वक़्त ख़त्म हो जाता है। अगर आपने वुज़ू भी किया था फिर मस्जिद में दाख़िल होकर सुन्नतें पढ़नी शुरू कर दीं तो आपको तीन सवाब मिल सकते हैं, बशर्ते कि आप नीयत कर लें—

1. वक़्त की सुन्नतों या नफ़्लों का,
2. तहीयतुल वुज़ू का,
3. तहीयतुल मस्जिद का।

'तहीयत' का मतलब अदब है, यानी वुज़ू और मस्जिद में दाख़िल होने का यह अदब है कि दोगाना नफ़्ल आप तहीयतुल मस्जिद या तहीयतुल वुज़ू की नीयत से अदा करें या उन सुन्नतों या नफ़्लों में, जो आप पढ़ें तहीयतुल वुज़ू और तहीयतुल मस्जिद की नीयत कर लें।

अज़ान

اذان اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ ؕ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اَشْهَدُ
اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ؕ حَيَّ عَلَى
الصَّلٰوةِ ؕ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ؕ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ؕ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है।

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है।

अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाह

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं।

अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाह

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं।

अशहदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह

मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

अशहदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह

मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

हय-य अलस्सलाह

आओ नमाज़ पढ़ने के लिए

हय-य अलस्सलाह

आओ नमाज़ पढ़ने के लिए

हय-य अलल् फ़लाह

आओ नजात पाने के लिए

हय-य अलल् फ़लाह

आओ नजात पाने के लिए

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

अल्लाहु बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है।

ला इला-ह इल्लल्लाह

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं

• फ़ज्र की अज़ान में 'हय-य अल फ़लाह' के बाद यह बढ़ा दिया जाता है—

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौम

नमाज़ नींद से बेहतर है

अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौम

नमाज़ नींद से बेहतर है

• जमाअत से पहले तक्बीर में 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद यह बढ़ाया जाता है—

قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ،

क़द क़ा-म-तिस्सलाह

नमाज़ (की जमाअत) खड़ी हो गयी

क़द क़ा-मतिस्सलाह

नमाज़ (की जमाअत) खड़ी हो गयी

अज़ान के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَنِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद दअ् वतित्तम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म-द निल-वसी ल

त वल् फ़ज़ी-ल-त वद्द-र-ज तर्रफ़ी-अ-त वब्-असहु मक़ामम महमूद-निल-लज़ी व अ त्त हू वर्ज़ुक़्ना शफ़ा अ-त-हू यौमल क़ियामति इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! ऐ परवरदिगार, इस पुकार के, जो मुकम्मल है और क़ायम होने वाली नमाज़ के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वसीला और फ़ज़ीलत और बुलंद दर्जा अता फ़रमा और उनको खड़ा कर मक़ामे महमूद में, जिसका तूने उनसे वादा किया है और हमको क़ियामत के दिन उनकी शफ़ाअत नसीब कर। बेशक तू वादा खिलाफ़ी नहीं करता।

सना

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ
وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ
وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा न कल्लाहुम-म व बिहम्दि क व तबार-कस्मु-क व तआला जद्दु-क व ला इलाहू ग़ैरु क०

तर्जुमा—हम तेरी पाकी का इक़रार करते हैं, ऐ अल्लाह! और तेरी तारीफ़ करते हैं और बहुत बरकत वाला है तेरा नाम, और बहुत बुलंद है तेरी बड़ाई और नहीं कोई माबूद तेरे सिवा।

तअव्वुज़

تعوذ أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम०

तर्जुमा—मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं शैतान मर्दूद से।

तस्मिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

तर्जुमा—शुरू करता हूं साथ नाम अल्लाह बख़्शिश करने वाले मेहरबान के।

सूरः फ़ातिहा

سُوْرَةُ الْفَاتِحَة اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ اٰمِيْن

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अर्रहमानिर्रहीम० मालिकि यौमिद्दीनि० इय्या-क नअ़्बुदु व इय्या-क नस्तईन० इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम० सिरातल्लज़ी-न अन अ़-म-त अलैहिम

ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन० (आमीन)

तर्जुमा—हर क़िस्म की सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जो पालने वाला है, तमाम जहानों का, बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला, मालिक है बदले के दिन का। (ऐ अल्लाह !) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। इसको सीधा रास्ता बता, रास्ता उनका कि इनाम किया तूने उन पर, न उनका कि गुस्सा किया गया उन पर और न गुमराहों का। (इलाही क़ुबूल फ़रमा)

सूरः काफ़िरून

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

क़ुल या अय्युहल काफ़िरून० ला अअ्बुदु० मा तअ्बुदु न० व ला अन्तुम आबिदू-न मा अअ्बुद० व

ला अना आदिबुम मा अबत्तुम० वला अन्तुम आबिदू-न मा अअ़बुद० लकुम दीनुकुम व लि-य दीन०

तर्जुमा—आप कहिए, ऐ मुन्किरो ! मैं नहीं पूजता उसको, जिसको तुम पूजते हो और न तुम पूजते हो उसको, जिसको मैं पूजता हू और न मैं पूजूंगा उसको, जिसको तुमने पूजा और न तुम पूजते हो उसको, जिसको मैं पूजता हू। तुमको तुम्हारी राह, मुझको मेरी राह।

सूरः इख़्लास

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ
الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ
يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

क़ुल हुवल्लाहु अहद० अल्लाहुस्समद० लम यलिद व लम यूलद० व लम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद०

तर्जुमा—(ऐ नबी ! कह दीजिए कि वह (यानी) अल्लाह एक है। अल्लाह बे-नियाज़ है। न जना

उसने किसी को और न वह जना गया और नहीं है उसके जोड़ का कोई।

सूरः फ़लक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ

कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़ ल क़ि॰ मिन शर्रि मा ख़ लक़॰ व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा व क़ब॰ व मिन शर्रि-न्नफ़्फ़ासाति फ़िल अुक़द॰ व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद॰

तर्जुमा—कह दीजिए, मैं पनाह लेता हूं उसकी, जो पैदा करने वाला है सुबह का, शर से उन तमाम के जिनको पैदा किया (अल्लाह ने) और शर से अंधेरी रात के, जब वह छा जाए और शर से दम करने वालों के गिरोहों में और शर से हसद करने

वाले के, जबकि हसद करे।

सूरः नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ اِلٰهِ النَّاسِ ۝٣
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ
صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिनासि० मलिकिन्नासि० इलाहिन्नासि० मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नासि० ल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि० मिनल जिन्नति वन्नास०

तर्जुमा—ऐ नबी कह दीजिए, मैं पनाह लेता हूं, रब से आदमियों के, जो बादशाह है सब आदमियों का, जो माबूद है सब इंसानों का, शर से वस्वसा डालने वाले के, जो पीछे हटने वाला है, जो कि वस्वसा डालता है दिलों में लोगों के, जिन्नों में से और इंसानों में से।

तक्बीर اللّٰهُ أَكْبَرُ تکبیر

अल्लाहु अक्बर

अल्लाह बहुत बड़ा है

रुकूअ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

रुकूअ में तीन बार कहे : सुब्हान रब्बियल अज़ीम।

तस्मीअ

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअल्लाहु लिमन हमिदह

'अल्लाह ने उस बंदे की (बात) सुन ली, जिसने उसकी तारीफ़ की।'

तहमीद

تحمید رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

रब-ब-ना लकल हम्द

ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे लिए सब तारीफ़ है।

सजदा سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى،

सजदे में तीन बार कहे : सुब्हान रब्बियल् अअला ।

तशहहुद या अत्तहीयात

تشہد اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَ
الطَّيِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ
رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى
عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्यु-हन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व व-र-कातुहू अस्सलामु अलैना व अला अिबादिल्ला-हिस्सालिहीन अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

तर्जुमा—तमाम इबादतें, जो ज़बान के ज़रिए होती हैं, अल्लाह के लिए हैं और तमाम इबादतें जो बदन के ज़रिए होती हैं और तमाम इबादतें जो माल के ज़रिए होती हैं, (अल्लाह के लिए हैं) सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और रहमत हो अल्लाह की और उसकी बरकतें। सलाम हो हम पर और बन्दों पर अल्लाह के जो नेक हैं। मैं गवाही देता हूं कि नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के और गवाही देता हूं मैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

दरूद शरीफ़

दरूद शरीफ़ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्ला हुम-म सल्लि अला मुहम्मदिव व अला

आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन-न क हमीदुम मजीद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और आल पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० की, जैसे रहमत नाज़िल फ़रमायी तूने इब्राहीम अलै० पर और आल पर इब्राहीम अलै० की। बेशक तू तारीफ़ के लायक़, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन-न क हमीदुम मजीद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़रमा

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और आल पर मुहम्मद सल्ल० की जैसी बरकत नाज़िल फ़रमायी तूने इब्राहीम अलै० पर और आल पर इब्राहीम अलै० की। बेशक तू तारीफ़ के लायक़, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا کَثِیْرًا وَّلَا
یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ مَغْفِرَۃً مِّنْ عِنْدِکَ
وَارْحَمْنِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ

अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव-व ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़-र-तम मिन अिन्दिक वर्हम्नी इन्न-क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह! बेशक ज़ुल्म किया मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म बहुत और नहीं बख़्शता है गुनाहों

को मगर तू ही, पस बख़्श दे मेरे लिए बख़्शिश अपने पास से और रहम कर मेरे ऊपर। बेशक तू ही बहुत बख़्श देने वाला, बहुत मेहरबान है।

सलाम

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह
(सलाम हो तुम पर और रहमत अल्लाह की)

सलाम के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु व मिन-कस्सलामु हय्यिना रब्बना बिस्सलामि व अद्ख़िल्ना दारस्सलामि तबारक-त या ज़ल जलालि वल इक्रामि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू ही सलामती देने वाला और तेरी तरफ़ से है सलामती। ज़िन्दा रख हमको ऐ हमारे रब ! सलामती के साथ और दाखिल कर हमको सलामती के घर (यानी जन्नत में) बहुत बरकत वाला है तू ऐ बड़ाई वाले और बुज़ुर्गी वाले।

आयतुल कुर्सी

آیۃ الکرسی اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ
لَا تَاْخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ
عِنْدَہٗۤ اِلَّا بِاِذْنِہٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْھِمْ
وَمَا خَلْفَھُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ
عِلْمِہٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ کُرْسِیُّہُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَئُوْدُہٗ حِفْظُھُمَا ۚ وَھُوَ
الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝

अल्लाहु ला इला-ह इल्लाहु अल हय्युल क़य्यूम० ला ताख़ुज़ुहू सि-न-तुंव-व ला नौम० लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि० मन ज़ल्लज़ी यश्फ़अु ञिन-द हू इल्ला बिइज़्निही यञ्लमु मा बै-न अय दीहिम व मा ख़ल्-फ़ हुम व ला युहीतू-न बिशैइम मिन ञिल्मिही इल्ला बिमा शा-अ व सि-ञ कुर्सीयुहुस्समा-वाति वल् अर-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा व हुवल ञलिय्युल अज़ीम०

तर्जुमा—अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा है, (दुनिया के कारख़ाने को) क़ायम रखने वाला है, न उसको ऊंघ आती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है। कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी जनाब में किसी की सिफ़ारिश करे, जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है और लोग उसकी मालूमात में से किसी चीज़ पर इहाता नहीं कर सकते, मगर जितनी वह चाहे और

उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर हावी है और उनकी हिफ़ाज़त उसको थकाती नहीं और वह आलीशान अज़्मत वाला है।

सूरः बक़रः का आख़िरी हिस्सा

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۚ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुसअहा लहा मा क-स-बत व अलैहा मक्त-स-बत० रब्बना ला तुवा ख़िज़्ना इन नसीना औ अख़्ताना० रब्बना

व ला तहमिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहू अलल्लज़ी न मिन क़ब्लिना० रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ता-क़-त लना बिही वअ्फ़ु अन्ना, वग़्फ़िर लना, वर्हमना, अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अलल क़ौमिल काफ़िरीन०

तर्जुमा—नहीं ज़िम्मेदारी डालता है अल्लाह किसी जान पर मगर जितनी उसकी ताक़त है, उसी को मिलता है जो कमाया और उसी पर पड़ता है जो किया। ऐ हमारे परवरदिगार! न पकड़ कर हमारी अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं। ऐ हमारे रब! न रख हम पर भारी बोझ जैसा रखा तूने उन पर जो हमसे पहले थे। ऐ हमारे रब! न लाद हम पर वह जिसकी हममें ताक़त न हो और दरगुज़र फ़रमा हमसे और बख्श दे हमको और रहम फ़रमा हम पर, तू हमारा मालिक और आक़ा है। बस मदद फ़रमा हमारी उनके मुक़ाबले में जो मुनकिर हैं।

दुआ

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न तंव-व फ़िल आख़ि रति ह-स-न-तंव-व क़िना अज़ाबन्नारि०

तर्जुमा—ऐ रब ! दे मुझको नेकी दुनिया में और आख़िरत में और बचा हमको दोज़ख़ की आग से।

तरावीह की नमाज़

रमज़ान के महीने में इशा के फ़र्ज और सुन्नतें पढ़ने के बाद बीस रक्अतें तरावीह की पढ़ना हर शख़्स के लिए सुन्नत है। जमाअत में दो-दो रक्अतें करके तरावीह पढ़नी चाहिए। हर चार रक्अतों के बाद कुछ देर आराम करना, सुस्ता लेना चाहिए। इस बीच नीचे लिखी दुआ पढ़ते रहें। इस दुआ का नाम 'तस्बीहे तरावीह' है—

تسبیح تراویح سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ
سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَ
الْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ
الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ
سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِكَةِ
وَالرُّوْحِ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ
يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ

सुब्हा-न ज़िल मुल्कि वल-म-ल-कूति सुब्हा-न ज़िल अिज़्ज़ति वल अज़्मति वल हैबति व क़ुद्रति वल् किब्रियाइ वल-ज-ब रूति० सुब्हानल-मलि किल हय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन क़ुद्दुसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रूहि अल्लाहुम-म अजिरना मिनन्नारि या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु०

तर्जुमा—पाक है वह ज़मीन की बादशाही और आसमान की बादशाही वाला, पाक है वह इज़्ज़त और बुज़ुर्गी और हैबत और क़ुदरत वाला और बड़ाई और दबदबे वाला। पाक है बादशाह (हक़ीक़ी), ज़िन्दा, जो सोता नहीं और न मरेगा, बहुत पाक है और बहुत ही मुक़द्दस हमारा परवरदिगार और फ़रिश्तों और रूह का परवरदिगार! ऐ अल्लाह! हमको दोज़ख से पनाह दे, ऐ पनाह देने वाले! ऐ पनाह देने वाले! ऐ पनाह देने वाले!

तरावीह की बीस रक्अतों के बाद वित्र भी जमाअत से पढ़ने चाहिएं। अगर तरावीह की कुछ रक्अतें बाक़ी रह गयीं और वित्र के लिए जमाअत खड़ी हो गयी, तो तरावीह की बाक़ी रक्अत जमाअत के साथ वित्र पढ़ने के बाद भी पढ़ी जा सकती हैं।

तरावीह में पूरा क़ुरआन मजीद एक बार में ख़त्म करना सुन्नत है।

वित्र—वाजिब हैं। इनकी तीनों रक्अतों में सूर

फ़ातिहा के बाद कोई सूरः पढ़ी जाती है। तीसरी रक्अत मे सूरः पढ़ने के बाद तक्बीर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाइए और बांध कर दुआ-ए-क़ुनूत पढ़िए। दुआ-ए-क़ुनूत के बाद क़ायदे के मुताबिक़ रुकूअ व सज्दे करके नमाज़ पूरी कीजिए। सिर्फ़ रमज़ान के महीने में जमाअत के साथ वित्र पढ़े जाते हैं।

दुआ-ए-क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ
بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ
وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ
مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ
نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ
وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ
بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तअीनु-क व नस्तग़्फ़िरु-क व नुअ मिनु बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क व नुस्नी अलैकल ख़ै-र व नश्कुरु-क व ला नक्फ़ुरु-क व नख़लउ व नतरुकु मंय्यफ़्जुरु-क० अल्लाहुम-म इय्या-क नअबुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नस्आ व नहिफ़दु व नर्जू रहम-त-क व नख़्शा अज़ा-ब-क इन-न अज़ा-ब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हम तुझसे मदद चाहते हैं और तुझसे माफ़ी मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी तारीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते और अलग करते है और छोड़ते हैं उस शख़्स को, जो तेरी नाफ़रमानी करे। ऐ अल्लाह ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते हैं और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते हैं और हाज़िर होते हैं खिदमत के लिए और तेरी

रहमत के उम्मीदवार हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है।

मुसाफ़िर की नमाज़

जो कोई शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ मुसाफ़िर हो, वह ज़ुहर, अस्र और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ दो रक्अत पढ़े और सुन्नतों का यह हुक्म है कि अगर जल्दी हो तो फ़ज्र की सुन्नतों के सिवा और नमाज़ों की सुन्नतें छोड़ देना दुरुस्त है, इनके छोड़ देने से गुनाह न होगा और अगर जल्दी न हो, न अपने साथियों से छूट जाने का डर हो, तो न छोड़िए और सफ़र में सुन्नतें पूरी-पूरी पढ़िए। उनमें कमी नहीं है। फ़ज्र और मग़रिब और वित्र की नमाज़ में भी कोई कमी नहीं है। सफ़र का अन्दाज़ा 48 मील या 77 किलोमीटर है।

बीमार की नमाज़

नमाज़ किसी हालत में न छोड़िए। जब तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की ताक़त हो, खड़े होकर नमाज़

पढ़िए और जब खड़े न हो सकते हों तो बैठकर नमाज़ पढ़िए, बैठे-बैठे रुकूअ कर लीजिए और रुकूअ करके दोनों सज्दे कर लीजिए। रुकूअ के लिए इतना झुकिए कि कमर और सर बराबर हो जाएं। अगर रुकूअ-सज्दा करने की क़ुदरत न हो, तो रुकूअ और सज्दे को सर के इशारे से अदा कर सकते हैं। सज्दे के लिए रुकूअ से ज़्यादा सर झुकाना चाहिए। सज्दा करने के लिए तकिया वग़ैरह कोई ऊंची चीज़ रख लेना नाजाइज़ है।

आदाबे ईदैन

ईदैन, (दोनों ईदों) की नमाज़ वाजिब है। ईद के दिन ईदगाह जाने से पहले मिस्वाक करना, ग़ुस्ल करना सुन्नत है। खुश्बू लगाना, तौफ़ीक़ के मुताबिक़ अच्छे कपड़े पहनना, ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह जाने से पहले कुछ खा लेना और ईदुल अज़्हा के दिन नमाज़ से वापस आकर खाना मुस्तहब है। नमाज़ ईदगाह में जाकर पढ़ना और रास्ता बदलकर आना.

पैदल जाना और रास्ते में—

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

'अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द'

पढ़ते जाना चाहिए। यह तक्बीर ईदुल फ़ित्र के दिन धीमी आवाज़ से और ईदुल अज़्हा के दिन ऊंची आवाज़ से पढ़नी चाहिए। ये तक्बीरें ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ को फ़ज्र की नमाज़ से तेरहवीं तारीख़ की अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ऊंची आवाज़ से कहनी चाहिएं। ईदुल अज़्हा की नमाज़ अदा करके क़ुर्बानी के लिए जानवर ज़िब्ह किये जाते हैं।

याद रखिए कि ईदैन की नमाज़ से पहले और बाद में ईदगाह में नफ़्ल नहीं पढ़े जाते, ईदुल फ़ित्र के

दिन ईदगाह जाने से पहले ग़नी (मालदार) के लिए सदक़ा-ए-फ़ित्र देना वाजिब है, फ़क़ीर पर वाजिब नहीं।

ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा

ईद की नमाज़ आबादी से बाहर खुले मैदान में जमाअत के साथ अदा करनी चाहिए। बूढ़े, कमज़ोर अगर शहर की बड़ी मस्जिद में पढ़ लें, तो भी दुरुस्त है। आपको चाहिए कि जब सफ़ें दुरुस्त हो जाएं और इमाम तक्बीरे तह्रीमा कहे तो आप भी दोनों हाथ कानों तक उठाकर तक्बीरे तह्रीमा 'अल्लाहु अक्बर' कहकर हाथ बांध लीजिए, फिर सना पढ़िए। इसके बाद तीन बार 'अल्लाहु अक्बर' कहिए और हर बार दोनों हाथ तक्बीरे तह्रीमा की तरह कानों तक उठाइए हर तक्बीर के बाद हाथ छोड़ दीजिए, मगर तीसरी तक्बीर के बाद हाथ फिर बांध लीजिए और इमाम 'अअूज़ु' और 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर क़िरात शुरू करे और मुक़्तदी ख़ामोशी से इमाम की

क़िरात सुनें और इमाम की पैरवी में रुकूअ व सज्दे करें—रुकूअ व सुजूद के बाद खड़े होकर दूसरी रक्अत की क़िरात खामोशी के साथ सुनिए। क़िरात पूरी करने के बाद जब इमाम तक्बीर कहे तो आप भी इमाम के साथ धीमी आवाज़ में तक्बीरें कहते जाइए और तक्बीरों के दर्मियान दोनों हाथ खुले छोड़ दीजिए। तीसरी तक्बीर के बाद भी हाथ बांधने के बजाए खुले छोड़ दीजिए और चौथी तक्बीर पर रुकूअ में जाइए और क़ायदे के मुताबिक़ 'क़ौमा', 'सज्दा', 'जल्सा' और 'क़अदा' के बाद दोनों तरफ़ सलाम फेर कर नमाज़ खत्म कीजिए। ईदैन की नमाज़ के बाद खुत्बा पढ़ना और सुनना सुन्नत है।

नफ़्ली नमाज़ें

तहज्जुद की नमाज़

इस नमाज़ का वक़्त आधी रात के बाद सुबह सादिक़ से पहले तक है। इस नमाज़ को दो-दो

रक्अत करके चार रक्अत से बारह रक्अतों तक पढ़ना चाहिए। इस नमाज़ के फ़ायदे बे-अन्दाज़ा हैं। जहां तक मुमकिन हो, इसे छोड़ना न चाहिए। जो आयतें या सूरतें याद हों, पढ़ लिया करें, कोई सूरः या आयत इसके लिए ख़ास नहीं है।

इशराक़ की नमाज़

जब सूरज ऊंचा हो जाए और उसकी ज़र्दी दूर हो जाए, तो चार रक्अत नमाज़े इशराक़ पढ़ी जाती है।

नमाज़े ज़ुहा (चाश्त की नमाज़)

चाश्त की नमाज़, नौ-दस बजे के वक़्त आठ रक्अत नमाज़ नफ़्ल पढ़िए। ज़वाल के बाद पढ़ें तो चार रक्अत पढ़िए, इसको नमाज़े ज़वाल कहते हैं।

नमाज़े अव्वाबीन

मग़रिब की नमाज़ के बाद छः या बीस रक्अतें नफ़्ल पढ़े जाते हैं। इनका नाम सलातुल अव्वाबीन है, जिसका पढ़ना सवाब व बरकत का सबब है।

हाजत की नमाज़

यह नमाज़ रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अंधे को सिखायी, वह आंखों में रोशनी वाले हो गये और उस्मान बिन्त हनीफ़ रज़ि० ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त में एक शख़्स को सिखायी, जिससे उसकी हाजत पूरी हो गयी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका तरीक़ा यह बताया कि अच्छी तरह वुज़ू कीजिए और दो रक्अत नमाज़ पढ़कर यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَسَّلُ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ
بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ
اِنِّيْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰى رَبِّيْ فِيْ حَاجَتِيْ هٰذِهٖ

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलु-क व अ-त-वस्सलु व अ-त-वज्जहु इलैक बिनबिय्यि-क मुहम्मदिन

नबिय्यिर्र हमति या रसूलल्लाहि इन्नी वज्जहतु बि-क इल्ला रब्बी फ़ी हाजती-हाज़िही लितुक़्ज़ा ली अल्लाहुम-म फ़शफ़्फ़िअहु फ़िय्य०

हिस्ने हसीन में बहुत-सी हदीसों की रिवायत से यह हदीस नक़्ल की गयी है।

नमाज़े तस्बीह

इसकी तर्कीब यह है कि 'अल्लाहु अक्बर' कहकर सना 'ला इला-ह ग़ैरु-क' तक पढ़िए फिर—

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरः 15 बार, फ़िर तअव्वुज़, तस्मिया, सूरः फ़ातिहा और कोई सूरः पढ़कर दस बार यहीं तस्बीह पढ़िए, फिर रुकूअ से सर उठाइए और तस्मीअ व तह्मीद के बाद यह तस्बीह दस बार पढ़िए, फिर सज्दे में जाइए और दस बार पढ़िए, फिर सज्दे से सर उठाकर दस बार पढ़िए, फिर दूसरे सज्दे में जाइए और दस बार पढ़िए, इसी तरह चार रक्अत पढ़िए।

हर रक्अत में 75 बार तस्बीह पढ़ी जाती है और चार रक्अतों में इसकी गिनती तीन सौ बार होती है।

याद रखिए रुकूअ और सज्दों में 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम' 'सुब्हा-न रब्बियल आला' कहने के बाद ये तस्बीहात पढ़िए। इसकी पहली रक्अत में 'अल हाकुमुत्तकासुर' दूसरी में 'वल अस्र', तीसरी में सूरः 'काफ़िरून' और चौथी में 'कुल हुवल्लाह' पढ़िए। अगर आप क़ुरआन के हाफ़िज़ हों, तो सूरः हदीद, सूरः हश्र, सूरः सफ़्फ़ और सूरः तग़ाबुन पढ़िए।

हर ग़ैर मकरूह वक़्त में यह नमाज़े तस्बीह पढ़ सकते हैं और बेहतर यह है कि ज़ुहर से पहले पढ़िए, हो सके तो हर रोज़ पढ़िए, वरना हफ़्ते में एक बार वरना महीने में एक बार, वरना साल में एक बार और यह भी न हो सके तो उम्र में एक बार पढ़िए।

जनाज़े की नमाज़

जनाज़े की नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़े किफ़ाया है, यानी

कुछ लोग अगर यह नमाज़ पढ़ लें तो सबकी नमाज़ अदा हो जाती है, लेकिन अगर कोई न पढ़े तो सब गुनाहगार होते हैं।

नीयत—जनाज़े की नमाज़ में जो दुआ पढ़ी जाती है, वह बच्चे के लिए अलग होती है और बड़े के लिए अलग। इसका ख़याल आप पहले से ही रखिए और जब आप नीयत यानी नमाज़े जनाज़ा का इरादा करें, तब ही ज़ेहन में फ़ैसला कर लीजिए कि नमाज़ बड़े की पढ़ रहे हैं या बच्चे की। अगर आप चाहें तो ये लफ़्ज़ कह सकते हैं—

मैंने नीयत की कि अल्लाह तआला के लिए चार तक्बीर नमाज़े जनाज़ा अदा करूं। तारीफ़ अल्लाह तआला के लिए है और दरूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए और दुआ इस मय्यत के लिए, इस इमाम के पीछे, काबा शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करते हुए।

तक्बीर—नीयत के बाद आप तक्बीरे तह्रीमा की

तरह दोनों हाथ कानों और सर के बराबर तक उठाकर नाफ़ के नीचे क़ायदे के मुताबिक़ बांध लीजिए, फिर आप यह दुआ यानी सना पढ़िए—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ
اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ
وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क व तबार-कस्मु-क व तआला जद्दु-क व जल-ल सनाउ-क व ला इला-ह ग़ैरु-क०

'इलाही ! तेरी पाकी (के साथ) और तेरी तारीफ़ के साथ (तुझे याद करता हूं) और बरकत वाला है तेरा नाम और तेरी शान बुलंद है और तेरी तारीफ़ बड़ी है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।'

सना के बाद इमाम 'अल्लाहु अक्बर' कहे तो आप भी तक्बीर कहिए और दरूद शरीफ़ पढ़िए—

दरूद शरीफ़

درود شریف اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّیْتَ وَسَلَّمْتَ وَبَارَكْتَ وَرَحِمْتَ وَ تَرَحَّمْتَ عَلٰٓی اِبْرٰهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرٰهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त व सल्लम-त व बारक्-त व रहिम-त व तरहहम्-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन-न-क हमीदुम मजीद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की आल पर रहमत भेज, जिस तरह तूने भेजी रहमत और सलाम भेजा और बरकत दी और मेहरबानी की और रहम किया हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर

और आल पर हज़रत इब्राहीम अलै० की। बेशक तू तारीफ़ किया गया बुज़ुर्ग है।

दरूद शरीफ़ के बाद इमाम के साथ आप भी तक्बीर अल्लाहु अक्बर कहिए और यह दुआ पढ़िए।

दुआ बड़े के लिए मर्द हो या औरत

دعا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَ
شَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا
وَذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا
فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا
فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

अल्लाहुम-मग़्फ़िर लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-क-रिना व उन्साना अल्लाहुम-म मन अहयै त हू

मिन्ना फ़ अहियही अलल इस्लामि व मन तवफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़ तवफ़्फ़हू अलल ईमान०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा और हमारे हर मुर्दा को और हमारे हर हाज़िर को और हमारे हर ग़ैर हाज़िर को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औरत को। ऐ अल्लाह ! तू हममें से जिसको ज़िन्दा रखे, तो उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हममें से जिसको मौत दे तो उसको ईमान पर मौत दे।

दुआ लड़के के लिए

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّ مُشَفَّعًا

अल्लाहुम-मज-अलहुलना फ़-र-तंव-वज-अलहु लना अजरंव-व ज़ुख़रंव-वज् अलहु लना शाफ़िअंव-व मुशफ़्फ़आ०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इस लड़के को हमारे लिए आगे पहुंचकर सामान करने वाला बना दे और इसको हमारे लिए अज्र (की वजह) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इसको हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वह जिसकी सिफ़ारिश मंज़ूर हो जाए।

दुआ लड़की के लिए

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا
فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّ
اجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط

अल्लाहुम्मज-अलहा ल ना फ़-र-तंव-वज अल हा लना अजरंव-व ज़ुख़रंव-व ज् अ ल हा लना शाफ़िअतंव-व मुशफ़्फ़:०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इस लड़की को हमारे लिए आगे पहुंचकर सामान करने वाली बना दे और हमारे लिए अज्र (की वजह) और वक़्त पर काम आने वाली

बना और इसको हमारे लिए सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वह जिसकी सिफ़ारिश मंज़ूर हो जाए।

दुआ के बाद इमाम के साथ आप भी तक्बीर 'अल्लाहु अक्बर' कहिए, फिर इमाम के साथ-साथ सलाम फेर लीजिए।

याद रखिए—नमाज़े जनाज़ा के बाद कोई दुआ नही होती। नमाज़े जनाज़ा ख़ुद दुआ है, हां क़ब्रस्तान में दाख़िल हों, तो बेशक यह दुआ पढ़ लीजिए—

क़ब्रस्तान में दाख़िल होने की दुआ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ اَنْتُمْ
لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ لَكُمْ تَبَعٌ وَّاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ
لَلَاحِقُوْنَ نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ وَيَغْفِرُ
اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ وَيَرْحَمُنَا اللّٰهُ اِيَّانَا وَاِيَّاكُمْ

अस्सलामु अलैकुम या अहलल क़ुबूरि अन्तुम

लना स-ल-फ़ुंव व नह्नु लकुम त-ब-उंव बइन्ना इन शाअल्लाहु बिकुम ल-लाहिक़ून० नस्-अलुल्ला-ह लना व लकुमुल आफ़ि-य-त व यग़्फ़िरुल्लाहु लना वलकुम व यर्हमुनल्लाहु इय्याना व इय्या कुम०

तर्जुमा—तुम पर सलाम हो ऐ क़ब्रों वालो! तुम हमसे पहले चले गये और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं और अगर अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ मिलने वाले हैं। हम अपने और तुम्हारे लिए ख़ुदा से राहत मांगते हैं और अल्लाह हमें और तुम्हें बख़्शे और रहमत करे अल्लाह हम पर और तुम पर।

मय्यत दफ़नाने के बाद क़ब्र पर किसी वक़्त भी फ़ातिहा पढ़ सकते हैं।

फ़ातिहा की तर्कीब यह है—

सबसे पहले तीन बार दरूद शरीफ़ पढ़िए।

फिर सूरः फ़ातिहा (यानी अल्हम्दु लिल्लाह) तीन बार

फिर सूरः इख़्लास (यानी क़ुल हुवल्लाह) बारह बार

फिर दरूद शरीफ़ तीन बार

(वक़्त की गुंजाइश के मुताबिक़ आप इसमें कमी या ज़्यादती भी कर सकते हैं। मौक़ा हो तो पूरी सूरः मुल्क भी पढ़ लीजिए।)

अब यह दुआ पढ़िए—

'ऐ अल्लाह ! जो कुछ मैंने पढ़ा है, उसको क़ुबूल फ़रमा और इसका सवाब इस क़ब्र वाले की रूह को बख़्श दे।'

शश कलिमात

छः कलिमे

हर मुसलमान को छः कलिमे ज़रूर याद होने चाहिएं, जो नीचे लिखे जाते हैं—

पहला कलिमा तय्यब

اوّل کلمہ طیّب لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल है।

दूसरा कलिमा शहादत

شہادت

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु, वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदुअन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

तर्जुमा—मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नही और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम०

तर्जुमा—पाक है अल्लाह और तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं और नहीं कोई माबूद अल्लाह के सिवा और अल्लाह बहुत बड़ा है और गुनाहों से बचने की ताक़त और नेक काम करने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो आलीशान और अज़्मत वाला है।

चौथा कलिमा तौहीद

چہارم کلمہ توحید

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُو الْجَلَالِ وَ
الْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युल ला यमूतु अब-दन अ-ब-दा० ज़ुल जलालि वल इक्रामिं बियदिहिल ख़ैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर०

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ़ है। वह ज़िन्दा करता है और मारता है और वह हमेशा-हमेशा

के लिए ज़िन्दा है जो मरेगा नहीं। अज़्मत और बुज़ुर्गी वाला है। बेहतरी उसी के हाथ में है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا أَوْ خَطَأً سِرًّا أَوْ عَلَانِيَةً وَّأَتُوْبُ إِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ أَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَا أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह रब्बी मिन कुल्लि ज़ंबिन अज़्नबतुहू अ-म-दन औ ख़-त-अन सिर्रन औ अला नि-य-तंव-व अतूबु इलैहि मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी अअ्लमु व मिनज़्ज़म्बिलज़ी ला अअ्लमु इन-न-क

अन-त अल्लामुल ग़ुयूबि व सत्तारुल उयूबि व ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि व ला हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम०

तर्जुमा—मैं अल्लाह से माफ़ी मांगता हूं जो मेरा परवरदिगार है, हर गुनाह से जो मैंने किया, जान-बूझकर या भूलकर, छिपाकर या खुल्लम-खुल्ला और मैं तौबा करता हूं उसके हुज़ूर में, उस गुनाह से जो मुझे मालूम है और उस गुनाह से जो मुझे मालूम नहीं। बेशक तू जानने वाला है छिपी बातों का और छिपाने वाला ऐबों का और बख़्शने वाला गुनाहों का और गुनाहों से बख़्शने की ताक़त और नेक काम करने की क़ुव्वत अल्लाह की तरफ़ से ही है, जो बड़ी अज़्मत वाला है।

छठा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ
اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ

لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِىْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन अन उश्रि-क बि-क शैअंव-व अना अअ़लमु बिही व अस्तग़्फ़िरु-क लिमा ला अअ़लमु बिही तुब्तु अन्हु व तबर्राअतु मिनल कुफ़्रि वश-शिर्कि वल किज़्बि वल ग़ीबति वल बिदअ़ति वन्नमीमति वल फ़वाहिशि वल बुहतानि वल मआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु व आमन्तु व अक़ूलु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि किसी चीज़ को तेरा शरीक बनाऊं

और मुझे उसका इल्म हो और माफ़ी मांगता हूं तुझसे उस गुनाह से जिसका मुझे इल्म नहीं। मैंने उससे तौबा की और बे-ज़ार हुआ कुफ़्र से और शिर्क से और झूठ से और ग़ीबत से और बिदअत से और चुग़ली से और बेहयाई के कामों से और तोहमत लगाने से और हर क़िस्म की नाफ़रमानियों से और मैं ईमान लाया और मैं कहता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

आख़िरी बात—नमाज़ के सिलसिले में किसी वक़्त कोई शुब्हा हो या कोई बात समझ में न आये तो बेहतर यह है कि ख़ुद अपने घर में किसी बड़े से पूछिए या क़रीबी मस्जिद के इमाम साहब से या किसी सनदयाफ़्ता आलिम से पूछिए।